।। वेराट छंद ग्रंथ ।।

।। पिंड ब्रम्हांड ।।

मारवाडी + हिन्दी

(१-१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना-रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ वेराट छंद ग्रंथ का भाषांतर ||

|| पिंड ब्रम्हांड संख्या ||

पुरा गुरू मिल्या, सांची सुज पाई ।
रटो राम नाम, आंछी ब्रिया आई ।।१।।

गर्भ मे शिष्य ने रामजी के साथ जो करार किया था वह करार क्या था यह जिस गुरु को पूर्णरुप से जैसे के वैसा मालूम है उस गुरु को पुरा गुरु कहते है । ऐसे पुरे गुरु शिष्य को मिले है और गुरु से गर्भ मे हर से रामनाम रटने का जो करार किया था उसकी पुरी समज भी मिली है ऐसा रामनाम रटने का अच्छा समय आया है इसलिये रामनाम रटो ।।।१।।

पाई नर देही, भरता खंड आयो ।
बंछे इन्द्र ब्रम्हा, अेसो तन पायो ।।२।।

तथा ब्रम्हा,विष्णु,महादेव और ३३ करोड देवतावो का राजा इंद्र रामजी पाने के लिये जिस भरत खंड की वंछना करते है ऐसे भरत खंड मे शिष्य आया है तथा जिस तन की चाहना करते वैसा मनुष्य तन मिला है ।।।२।।

दिवी सुज सारी, लिया ग्रभ बाचा ।
कियो कोल हरसु, करो बोल साचा ।।३।।

मतलब शिष्य को रामनाम रटने के लिये जैसा चाहिये वैसा भरत खंड मिला है । भरत खंड मे मनुष्य तन मिला है । मनुष्य तन के साथ पुरे गुरु मिले है,गुरु से गर्भ के रामनाम रटूँगा इस करार की समज मिली है याने शिष्य के लिये अच्छा समय आया है । इसलिये शिष्य ने अब रामनाम रटकर हर को जो बचन दिये थे वे बचन पूर्ण सच्चे करने का समय आया है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर नारी को कह रहे है ।।।३।।

|| सिखवाच ||

जत्तो सत्त साझ्या, तपो त्याग कीना ।
हुवा सुभ करमी , सुरगा दीक लीना ।।४।।

शिष्य पुरे गुरु से पुछते कि जीव जत रखता है,सत साझता है,तप करता है,त्याग करता ऐसे शुभ शुभ कर्म करता और स्वर्गादिक प्राप्त करता है और स्वर्ग मे जाकर स्वर्ग का देवता बनता है और वहाँ पहुँचने के बाद मनुष्य तन माँगता है इसका क्या अर्थ यह मुझे बता वो ।।।४।।

करे जीग सो अेक, हुवे इन्द्र राजा ।
बंछे नर देही, जीका किन काजा ।।५।।

अनेक कष्ट से एक सौ एक यज्ञ कर ३३करोड देवो का राजा इंद्र बनता है ऐसे कष्ट से बना हुवा इंद्र राजा मनुष्य तनकी वंछना करता है इसका क्या कारण है ?यह मुझे बतावो

|||५||

ब्रम्हा बिधाता, रचे जीव सोई ।
मिनख तन माँगे, कवो अरथ मोई ||६||

ब्रम्हा विधाता है । सभी जीवोकी रचना करता है । ऐसा सभी जीवो की रचना करनेवाला ब्रम्हा मनुष्य शरीर माँगता है इसका अर्थ क्या है यह मुझे बतावो |||६||

|| सतगुरू वायक ||

अबे संत बोल्या, सुणो सिष बाणी ।
करू न्याव ऐसा, जेसा दूध पाणीं ||७||

संत ने शिष्य को कहाँ की मै तेरे प्रश्न का उत्तर दूध का दूध और पानी का पानी न्याय से अलग अलग करके समजाता हूँ |||७||

करे सुभ सारा, पदवी देवे पावे ।
हुवे पुन पूरा, वांसु काळ डावे ||८||

जीव इस जगत मे शुभ शुभ कर्म कर देव पदवी प्राप्त करता । वहाँ उसका पुण्य खत्म हुवा की बलवान काल स्वर्ग से मृत्युलोक के चौरासी लाख योनी मे ढकेल देता |||८||

भोगे पुन्न पेली, भुगते पाप पीछे ।
हुवे पसु पंखी, मानव तन अंछे ||९||

जीव स्वर्गमे पुण्य पहले भोगता और किये हुये पापोके पशु,पछी ऐसे लाख चौरासी योनी मे पडकर दु:ख भोगता । यह दु:ख सदाके लिये मिटानेके लिये देवता प्रभूसे मनुष्य तन माँगते । ||९||

बळी काल ऐसो, ब्रम्हा इन्द धुजे ।
बिना पद पुंता , परले काळ सुजे ||१०||

ऐसे क्रुर जुलूमी बलवान काल से ब्रम्हा,विष्णु,महादेव तथा इंद्र और इंद्र के समान देवता सभी धुजते । रामजी के पद पहुँचे बिना काल का मार और चौरासी लाख योनी का फेरा सामने दिखता |||१०||

जब देव जाणे, भरता खण्ड जावा ।
करा भक्ति केवळ, परमपद पावा ||११||

इसलिए सभी देव भरत खंड जाकर केवल भक्ति करके परमपद पाने का सोचते |||११||

मिले मिनखां देहीं, आवे साध सरणो ।
जुरा काळ जीतें, मिटे जलम मरणो ||१२||

भरत खंडमे मनुष्य तन मिलायेंगे केवली साधूका शरणा धारन करेंगे और रामनामकी भक्ति करके बुढापा,काल तथा जनम मरनका फेरा मिटाकर महासुख का परमपद पायेंगे |||१२||

रटे राम रसणा, कटे क्रम सारा ।
धुवे सांस उसांसो, लंघे भव पारा ।।१३।।

साधू का शरणा लेकर साँसो साँसा मे धुव्वाधर रामनाम रटने से सभी कर्म कट जाते और जीव भवसागर लांघकर परमपद पहुँच जाता ।।।१३।।

सुणे संत बाणी, गहे पंथ सुधा ।
हिरदे जोत जागे, मिटे अंध चुन्धा ।।१४।।

संतो का ज्ञान सुनकर सच्चे परमपद का रास्ता धारन करता और हृदय मे सतज्ञान की ज्योती जागृत होती और अंध चुंध याने भ्रम का अंधेरा मिट जाता ।।।१४।।

तजे आन दूजा, करे संत सेवा ।
भजे देव आतम, लखे भक्त भेवा ।।१५।।

परमात्मा छोड्कर अन्य सभी देव त्यागता और संत के शरण आकर आत्मा मे जो परमात्मा देव बसा है उसके भक्ति का भेद समजकर उस परमात्मा देव को भजता ।।।१५।।

।। दोहा ।।

आतम में प्रमातमा, आगत लखे न कोय ।
भरम करम में जुग बंधीया, मुगत क्हां सुं होय ।।१६।।

आत्मा मे परमात्मा जो देव है उसकी गती पुरे गुरु सिवा कोई भी नही लखता । अपुरे गुरु के कारण जगत के सभी जीव भ्रम मे और कर्म मे बांधे जाते और जीवो की चौरासी लाख योनी के दु:ख से मुक्ति नही होती ।।।१६।।

सुण बाणी सिष चेतीया, सिंवरण लागा सुर ।
राम नाम लिवल्या लगी, सुण्या अनाहद तुर ।।१७।।

जो जीव पुरे गुरु से परमपद की बाणी सुनते वे चेतते और वे रामनाम से लिव लगाकर सुमिरन करते । उन्हे अनहद बाजे सुनाई देते ।।।१७।।

।। चौपाई ।।

सरवण भवन सवावणा लागे, सुण्या सरवणा बाजा ।
मनवो हरक बधाई किनी, धिंन सतगुरू महाराजा ।।१८।।

यह बाजे कर्ण को सुहावने लगते । उसका वे सुहावने बाजे सुनकर मन उल्हासित होता और सतगुरु महाराज को धन्य धन्य करता और सतगुरु की बधाई बाटता ।।।१८।।

राम नाव रसना लिव लागी, कंठ में गद गद बाणी ।
कन कन रूम कुम कुमी चाली, नेणन संब वे पाणी ।।१९।।

रामनाम के रसना से लिव लग जाती,कंठ मे गद गद बाणी होने लगती,रोम रोम मे कुम कुमी याने थरथराट चलने लगती और नयनो से न रुकते पानी बहने लगता ।।।१९।।

कंठ भवना बिच कंवळा फुल्या, जामे शब्द प्रकासा ।

सुरत निरत मन पवना दिसे, आवत जावत सांसा ।।२०।।

कंठ के घर मे कमल फुलता उस कमल मे शब्द का प्रकाश होता । सुरत,निरत,शब्द साँस दिखते तथा आता जाता साँस दिखने लगता ।।।२०।।

झिलमिल झिलमिल ज्योत झिगा मिग, बाजे अनहद तुरा ।
हिरदा भवन बिराज्या सतगुरू, तेज पुंज का नुरा ।।२१।।

झिलमिल झिलमिल ऐसा ज्योती का झगमगाट दिखने लगता और अनहद तुरी याने मुँहसे फूँक देकर बजाने का वाद्य समान बाजे बजने लगता । हृदय के घर मे सतगुरु बिराजमान हुयेवे दिखते । उन सतगुरु का तेजपुंज का नूर दिखने लगता ।।।२१।।

अमृत बूंद लुम झड लागी, मोत्या अमर छाया ।
आतम में परमातम प्रगटया, नांव नाभ घर आया ।।२२।।

अमृत के बूँदो की झडी उपर आकर झड्ने लगती । सब आकाश मोतीयो के प्रकाश से छाया हुवा दिखने लगता । आत्मा मे परमात्मा प्रगट हुवा लगता । नाम हृदय कमल से नाभी के घर आया ऐसा दिखता ।।।२२।।

वाई सुरत शब्द मुख लवल्या, कळी कंवळ मन पवना ।
जीके झिलामील हिरदे हुँ ती, सो बिध नामी भवना ।।२३।।

नाभी मे गुरुदेवजी की वही सुरत,वही,शब्द,वही मुख की लवल्या और मन और साँस दिखने लगे । जैसे झिलमिल हृदय मे हो रही थी उसी विधी से झिलमिल नाभी के भी घर मे हो रही यह दिखता ।।।२३।।

गुदा घाट पर अनहद गरज्या, ररंकार धुन बोली ।
छेद्या चक्कर कंवळ षट बिंद्या , खट बारी ले खोली ।।२४।।

आगे गुदाघाटपर अनहद ध्वनी गरजने लगी,उससे ररंकार की ध्वनी निकलने लगी । इसतरहसे छःचक्रोका छेदन करके याने छःकमलोका छेदन करते पुरब के छःही खिडकियाँ खोली । ।।२४।।

|| दोहा ||

खट पोळ्यां जन खोल के, पोंथा पिछम घाट ।
पुरब को पंथ छाड के, गही बंक की बाट ।।२५।।

इसप्रकार हंस छःदरवाजे खोलके पश्चिम के घाट पहुँचा । अब पूर्व का रास्ता छोड्के बंकनाल का रास्ता पकडा ।।।२५।।

अनंत संत आगु गया, ओजु अनंताँई जाय ।
सो मारग सुखराम केहे , सतगुरू दियो बताय ।।२६।।

जिस मार्ग से पहले भी अनंत संत गये और आज भी अनंत संत जा रहे है ऐसा पश्चिम का मार्ग सतगुरु ने मुझे बताया ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे है

|||२६||

|| छन्द जात मोती दान ||

आया सत सब्द, पिछम हो बाट ।
उठी घोर गरजे हो, मेर के घाट ||२७||

अब यह सतशब्द संखनाल के रास्ते से आकर बंकनाल के रास्ते से चलने लगा और मेरु के घाट पे इस शब्द की घोर गर्जना होने लगी |||२७||

गरज्यो गिगन, चडयो गर नाट ।
धुज्यो धर अंम्मर, सारो बेराट ||२८||

गिगन मे सतशब्द की गरनाट होने से गिगन गरजने लगा और धरती,आकाश और सभी बैराट धुजने लगे |||२८||

धड़ हड़ गिगन, कंप्यो शरीर ।
चडयो असमान ही, उलटो नीर ||२९||

गगन मे धड्हड धड्हड ऐसी गर्जना होने लगी तब यह शरीर काँपने लगा और उपर आकाश के ओर पानी उलटकर चढने लगा |||२९||

करे गुरूदेव कुं, प्राण पुकार ।
प्रभु मेरो कीजियो, बेड़ो पार ||३०||

तब यह प्राण गुरुदेवजीको पुकारने लगा और मेरा डोंगा पार कर दो ऐसी प्रार्थना करने लगा । ||३०||

ओखा पंथ पिछम, ओघट घाट ।
खुल्या गुरू मेहेर ते, भिस्त कपाट ||३१||

पश्चिम का रास्ता बहोत कठीण है । इस रास्ते मे बहोत बिकट घाट है फिर भी गुरुजी के मेहेर से भेस्त का दरवाजा खुल गया |||३१||

सुरा संत जीत्या हे, जमसुं राड ।
पगा तल दियो हे पीसन पाड ||३२||

शुरवीर संत ने यम से लढाई की और यम पे जय प्राप्त किया । रामजी के देश आडे आनेवाले सभी बैरीयो को पैरोतले कुचला |||३२||

पुंथा हे अब, राम दरगे ई जाय ।
दियो हे दाद लियो, हे चरणा लगाय ||३३||

और जाकर रामजी के दर्गे मे पहुँचा । रामजी ने काल के साथ शुरवीरता से लढाईकर दर्गे पहुँचा दाद दी और अपने चरणा लगा दिया |||३३||

|| भगवत बचन ||

साचो जन साचो, हे राम बिड़द ।
मान्यो मन मेंवासी, किनो सड़द ||३४||

भगवंत ने संतो से कहाँ की तुम शुरवीर संत हो और यह रामनाम का धर्म(ब्रिद)ही सिर्फ सच्चा है । तुमने मन को मारकर मन का नाश किया ।।।३४।।

डारियो भौ सागर, मोहो की फांस ।
हुवो तु सन मुख, साचो ई दास ।।३५।।

मैने तुम्हे भवसागर मे मोह के फांस मे डाला था परंतु तुम मेरी भक्ति करके सनमुख हो गये ऐसे तुम मेरे सच्चे दास हो ।।।३५।।

करूं मे रीज, पटा बकसीस ।
दियो मेरो नांव, बिस्वाई बीस ।।३६।।

इसलिये मै तुम्है बक्षिस मे अमरलोक का पटा देता हूँ और मेरा नाम बिसवाबिस देता हूँ । ।।३६।।

भगत मुगत हे, नांव की लार ।
बगस्या हुँ लाख, गुन्हा इन बार ।।३७।।

मेरे इस नाम के पिछे मुक्ति मिलती है और मैने तुमारे लक्ष अपराध माफ कर दिये है ।।।३७।।

भगत वत्छल हे मेरो नॉव ।
क्रपाल दयाल कहाऊँ मे राम ।।३८।।

मेरा भक्त वत्सल यह नाम है । मुझे कृपालु राम,दयालु राम कहते है ।।।३८।।

कीन्ही मे दया, गंजे नहीं काळ ।
पड़े नहीं बोहोरूं ही माया जाळ ।।३९।।

मेरे दया के बाद जीव को काल गंजता नही और जीव फिरसे माया जाल मे पड्ता नही । ।३९।

अेसी अद्‌भुत, अचंबा की ही बात ।
दिखाई ये दास कुं दिना नाथ ।।४०।।

ऐसी काल न गंजने की और फिरसे माया जाल मे न पड्ने की अद्‌भूत अचंबे की बात अपने दास को दिनानाथ ने प्रगट करा दि ।।।४०।।

हुवो एक पिन्ड, तणो ब्रहमंड ।
बस्यो ज्यां मे सांतु ई , दिप नौ खण्ड ।।४१।।

नाम के बक्षिससे दास का पिंड ब्रम्हंड बन गया । पिंड्मे सातो द्रिप और नौ खंड हो गये ।।४१।।

बद्या जन ऐसे, शब्द ही साथ ।
पताला ही पांव, अकासा ही हाथ ।।४२।।

इस शब्द के पराक्रम से संत के पाव पाताल तक और हाथ आकाश हो गये इसप्रकार

संत का देह बढ गया ।।।४२।।

लागी लिव धरण, गई ब्रहमन्ड ।
बद्या जेसे बावन, के कर दंड ।।४३।।

धरती लगी हुई लिव ब्रम्हंड तक गई । जैसा वामन अवतार छोटा बनकर आया था,उसके हाथ मे पकडने की लाठी भी छोटी थी,तब वामन अवतार बढकर बडा हो गया,तब उसके हाथ के दंड भी,बडे बनकर वामनके संग बढ गई,वामनके हाथमेके दंडको पत्ते,फुल,टहनीयाँ कुछ भी नही थी,सुकी हुई लकडी का दंड था,वह भी बढ गया ऐसे ही संत,वामन के हाथ के दंड जैसे(लकडी जैसे)बढ गये ।।।४३।।

रच्यो अेक अेसो, चानण चोक ।
दिसे तामें तिन हीं, चवदा लोक ।।४४।।

हंसके पिंडमे चांदनी चौककी रचना हुई । उसमे चवदा भवन तथा तीन लोक दिखने लगे ।४४।

देखुं गुरू ग्यान, लिया दुर्बीण ।
रच्यो ओ भोडल, भवन किण ।।४५।।

मैने गुरुके ज्ञान दुर्बिणसे सब देखा । ऐसा अभ्रक का अदभूत मकान किसने रचाया होगा ।४५।

झिगा मिग लागी हे, सुरग पयाळ ।
प्रभु म्हारे जोई हे, दिपग माळ ।।४६।।

इस पिंडमे पातालसे स्वर्गतक झगमगाट लगी दिखी ऐसी प्रभूने मेरे अंदरही दिपमाला लगा दी । ।।४६।।

भला भल उगा हें, भाण अनेक ।
उजाळा हो बायर, भीतर अेक ।।४७।।

भळाभळ(बडे भपकेदार)अनेक सूर्य उगा दिये,(उन सुर्यो का प्रकाश)बाहर और अंदर एक जैसा प्रकाश है ।।।४७।।

भऱ्या रस अमृत, ठलाई ठाम ।
हुवो अब रूम ही रूम में राम ।।४८।।

मेरा पिंड खाली बर्तन था उसमे अमृत भर दिया । मेरे रोम रोम मे राम नाम हो गया ।।।४८।।

।। सिख वायक ।।

आवे हे एक, अचंबो मोय ।
प्रभु पिन्ड ब्रहमन्ड , केसे हे होय ।।४९।।

हे प्रभु,मुझे एक अचंबा हो रहा है कि यह पिंड ब्रम्हंड कैसे हुवा ? ।।४९।।

।। भगवत वचन ।।

ओ तो निजनांव, प्राक्रम हे सन्त ।
खंड पिंड ब्रम्हंड , लीला अनंत ।।५०।।

भगवंत ने कहा यह पराक्रम निजनाम का है । इस निजनाम से पिंड अनंत लिलाका खंड ब्रम्हंड बन जाता है ।।।५०।।

सुणो अेक मेर, हमारी ओर ।
रच्ची म्हे काज, सन्ता की ठोड ।।५१।।

मैने संतो के लिये अद्‌भूत देश रचा हूँ यह मेरे मेहेर की ओर एक बात है ।।।५१।।

भ्रम्या हो बेमुख, जुण अनन्त ।
बताऊँ देश, बिराजे सन्त ।।५२।।

जीवो का मुझसे बेमुख हो जाने के कारण अनंत योनीयो मे दु:ख भोगते फिरना पडा । अब मै तुझे संत बिराजते वह देश बताता हूँ ।।।५२।।

जठे नाही अंबर , धरण आधार ।
जठे नाही त्रिगुण, जाळ पसार ।।५३।।

वहाँ यहाँके समान धरती,आकाश नही है । वहाँ के धरतीको यहाँके समान टेका नही है । वहाँ यहाँ के समान त्रिगुणी माया के जाल का पसारा नही है ।।।५३।।

जठे नाही सुरगर, मध पयाँल ।
जठे नाही काळ, जुरा जम जाळ ।।५४।।

वहाँ यहाँके समान स्वर्ग,मृत्यु तथा पाताल लोक नही है । वहाँ काल नही है । वहाँ बुढापा नही है तथा जम का जाल नही है ।।।५४।।

जठे नही तत्त, प्रगट बेराट ।
जठे अेक राम, जना कोई थाट ।।५५।।

वहाँ यहाँ के समान पाँच तत्व तथा पच्चीस प्रकृती नही है । वहाँ यहाँ से पहुँचे हुये राम जनो के आनंद का थाट है ।।।५५।।

जठे नाही चारूं, हुं बाणी र खाण ।
जठे नाही उत्तपत, प्रळो हे जाण ।।५६।।

वहाँ पे यहाँके समान चार बाणी(परा,पश्चंती,मध्यमा,वैखरी)तथा चार खाण(जरायुज, अंड्ज,अंकुर,उद्विज)नही है । वहाँ पे यहाँके समान उत्पत्ती और प्रलय नही है ।।।५६।।

जठे नही ब्रम्हा विसन महेश ।
जठे नही चंदर, सूरज शेश ।।५७।।

वहाँ पे यहाँ के समान ब्रम्हा,विष्णू,महादेव नही है । वहाँ पे चाँद और सुरज नही है । वहाँ पे शेषनाग नही है ।।।५७।।

जठे नही दाणु ,देव ओतार ।

जठे नही जीव ,जम सिर मार ।।५८।।

वहाँ राक्षस भी नही, देव भी नही और अवतार भी नही और वहाँ जीव के सिरपर जम का मार भी नही ।।।५८।।

जठे नही इन्द, पुरन्दर देव ।

जठे नही तिरथ , मुरत सेव ।।५९।।

वहाँ यहाँ के समान इंद्र तथा पुरंदर देव नही है तथा वहाँ यहाँ के समान तिर्थ नही है । और मूर्ती की सेवा नही है ।।।५९।।

जठे नही ब्याक्रण, बेद पुराण ।

जठे नही पिन्डत, काजी कुराण ।।६०।।

वहाँ यहाँ के समान वेद,पुराण,व्याकरण,शास्त्र नही है । वहाँ यहाँ के समान पंडीत और काजी नही है । वहाँ यहाँ के समान कुराण नही है ।।।६०।।

जठे नही जोगी ही , जंगम बोध ।

जठे नही ग्यानर, ध्यान प्रमोध ।।६१।।

वहाँ यहाँ के समान जोगी,जंगम ऐसे छःदर्शन नही है । वहाँ यहाँ के समान बुध्द नही है । वहाँ पे यहाँ के समान माया ब्रम्ह का ज्ञान,ध्यान तथा उपदेश नही है ।।।६१।।

जठे नही ओऊं रू, इंच्छ्या प्रवेस ।

जठे अेक सन्त, जना कोई देश ।।६२।।

वहाँ पे ओअम और इच्छा इस मायाको प्रवेश नही है । वहाँ पे सभी महासुखी संत ही संत है । ऐसा वह महासुखो का संतो का देश है ।।।६२।।

सुणों आ म्हेर, हमारी अगाध ।

देऊँ मेरो नांव , मिलावुँ हुँ साध ।।६३।।

मेरी अगाध मेहेर सुनो,मै मेरे साधू जीवको मिला देता और मेरा नाम साधूके द्वारा देता । ।६३।

सिपत्ती ये सास्त्र , नांव अपार ।

रटे निज सन्त, जकों तत्त सार ।।६४।।

जगत मे अपार नाम और शास्त्र है परंतु इस राम जना के देश पहुँचने के लिये ये सभी अपार नाम और शास्त्र झूठे है । इन शास्त्रोसे और नामोसे वहाँ पहुँचे नही जाता । जो संत नाम रटते है वे मेरे देश पहुँचते है । इसलिये वही नाम तत्तसार है ।।।६४।।

अनेकाई मत, अनेकाई पंथ ।

मिले मुज माय, जको पंथ सत्त ।।६५।।

तीन लोक मे अनेक मत है और अनेक पंथ है । जो मत और पंथ मुझमे मिलता है वही पंथ सत्त है बाकी सभी झूठे पंथ है ।।।६५।।

न जाणु हुँ कुण, हमारा हे नाम ।
सुण्या में जाय, सन्ता मुख राम ।।६६।।

हमारा नाम क्या है यह मै नही जानता । मैने संतो के मुख से मेरा नाम राम है यह सुना ।६६।

रट रट राम, मिल्या मुज माय ।
दूजा मत पंथ, दिसों दिस जाय ।।६७।।

यह राम नाम रटन करके मेरे मे मिल गये । रामनाम छोड्कर दुजे सभी पंथ माया मे दिशोदिश भटक गये ।।।६७।।

भूले मती ओर, भरमा मांय ।
रटे निजनांव, सन्ता संग जाय ।।६८।।

इसलिये अब दुजे मत और पंथ मे भूलो मत । संतो के साथ जाकर निजनाम रटो ।।।६८।।

मे ही गुरू सन्त, मे ही सतस्वरूप ।
जाणे अेहे दोनुं, रूप अनूप ।।६९।।

मै ही गुरु हूँ । मै ही संत हूँ । मै ही सतस्वरुप हूँ । ऐसे गुरु और संत के मेरे रुप अनूप है। उन मेरे गुरु और संत के रुप को उपमा देते नही आता ।।।६९।।

धरी मे येम, सन्ता की देह ।
बरसे हे बादळ, में ज्यूं मेह ।।७०।।

मैने संत की देह धारण की है । जैसे बादल इस जल से(बादल यह जल रहता)धरती पे जल गिरता इसीप्रकार सतस्वरुप से संत धरती पे निपजते ।।।७०।।

धऱ्यो बफ जीव, चेतावण काज ।
गुरू अेक सन्त, हमारो ई साज ।।७१।।

मैने जीवोको परमपद चेताने के लिये देह धारण किया है । गुरु और संत ये मेरे ही स्वरुप है । ।।७१।।

बोले मुख साध, हमारी ई बाण ।
इसी बिध जीव, जगावे हे आण ।।७२।।

साधू अपने मुख से मेरी बाणी बोलते है और साधू बाणी के विधी से जीव को जगाते है।।७२।।

ऊधारूं हुँ तारू हुँ , करूँ में साय ।
राखुं बिड़द संता को, जग मांय ।।७३।।

जो कोई संतो का ज्ञान धारण करते है उनको मै ही तारता हूँ,मै ही उध्दारता हूँ । संतो के शरण मे आये हुये जीवो की मै ही सहायता करता हूँ । इसप्रकार संतो का ब्रिद

रखनेवाला मै ही हूँ ।।।७३।।

कउँ अब राम, जना को देश ।।
सदा रस अमर, अेको हो भेस ।।७४।।

अब मै तुम्हे संत जहाँ पहुँचते है ऐसे राम जना के देश का वर्णन बताता हूँ । वह सदा एक रस सुखो का है,अमर है और एक सरीखा सुख देनेवाला है ।।।७४।।

साचा गुरू बिरम, बिस्वा बीस ।
तपे सुखदेव के, सदा ही सीस ।।७५।।

मेरे गुरु बिरमदासजी बिसवा बीस सच्चे है । वे मेरे सिरपर सदा तपते है ।।।७५।।

।। दोहा ।।

घट मांही दरसन देऊँ, मम मुरत निराकार ।
बाहिर गुरू उपदेश दे, सो मेरो आकार ।।७६।।

भगवंत कहते है घट मे दर्शन होते है वह मेरी निराकार मूर्ती है और जगत मे उपदेश देते है वह मेरी आकारी मूर्ती है ।।।७६।।

सतगुरू बदन निहार के, मांही मुरत देख ।
दोनु अेक सरूप यह, तोमे सतगुरू अेक ।।७७।।

इसलिये तुम सतगुरु का शरीर निहारकर घट मे सतगुरु की मूर्ती देखो । सतगुरु की मूर्ती और घट के अंदर की मूर्ती एक है तो मै और सतगुरु एक है इसमे अंतर मत जानो ।।।७७।।

सतस्वरूप क्यो नांव हे, सदा रहे सो सत्त ।
असत सब चल जायगा, यूं बोल्या भगवत्त ।।७८।।

मेरे देश का नाम सतस्वरुप इसलिये है कि यह सदा से है । बाकी सभी माया के स्वरुप महाप्रलय मे बारबार मिट जाते है ऐसे भगवंत बोले ।।।७८।।

चल हंसा जां जाईये, जां राम जना को देस ।
आवागमन न ओतरे, अमर अेको भेष ।।७९।।

भगवंत सभी हंसो को रामजना के देश चलो करके कहते । वहाँ आवागमन नही है । वहाँ के संत सदा अमर है ।।।७९।।

।। अमर देश सिध्द लोक छंद जात भुंजगी ।।

अधर देश उँचो , सबे लोक छाया ।
खण्ड पिन्ड ब्रहमन्ड , उण हेट आया ।।८०।।

वह देश अधर है और सबसे उँचा है । यहाँ के तीनो लोक उसके निचे आये है और पिंड,खंड, बम्हंड ये सभी उसके निचे आये है ।।।८०।।

अखी अमर अेको, नहीं काळ आवे ।
तिहुँ लोक चवदा, सबे काळ खावे ।।८१।।

वह अखंड है । अमर है । वहाँ काल नही पहुँचता । यहाँ काल आता और सभी तीन लोक चवदा भवन को खा जाता ।।।८१।।

कीती बेर उपना, किती बेर भंजे ।

इसर बिसन ब्रम्हा, सिरे काळ गंजे ।।८२।।

यहाँ जीव कितने ही बार जनमता है और कितने ही बार मरता है । यह काल ब्रम्हा,विष्णू, महादेव पे भी गंजता है ।।।८२।।

इकीस आगे, ब्रहमन्ड चुरे ।

असो देस दुरे, पोहचे भाग पुरे ।।८३।।

वह देश इक्कीस स्वर्ग के आगे है । ये इक्कीस ब्रम्हंड(इक्कीस स्वर्ग)जो उल्लंघन करेगा वही वहाँ पहुँचेगा । ऐसा वह देश दूर है । वहाँ कोई भागवान जीव ही पहुँचता है ।।।८३।।

लंग्या लोक सारा, सिला सिध लोपी ।

तीथगंर ब्राज्या, प्रम ज्योत रूपी ।।८४।।

मै सभी लोक लांघकर सिध्दसिला पहुँचा । उस सिध्दसिला के निचे परमज्योत रुप मे तिर्थंकर बिराजे है उन्हे देखा ।।।८४।।

मुनि मगनी सारा, अेको सरूप ध्यानी ।

नहीं कुरब कारण, सबे केवळ ग्यानी ।।८५।।

सभी तिर्थंकर मौन धारन कर बैठे है और ध्यान मे मग्न है । वहाँ कोई छोटा बडा नही है । सभी एकसरीखे केवल ज्ञानी है ।।।८५।।

निर्भे थान जागा, सुखो दु:ख नाई ।

हुँ ती आद बिरती, जका अंत मांही ।।८६।।

वह जगह निर्भय है । यहाँ सुख और दु:ख दोनो नही है । वहाँ तिर्थंकरो की जो वृत्ती आदि मे थी वैसे ही अंततक रहती ।।।८६।।

नहीं सेंघ असेंघा, नहीं मम मेरा ।

नहीं गुरू सिखंग, नहीं भ्रात भेरा ।।८७।।

वहाँ कोई पहचानवाला या न पहचानवाला यह स्थिती नही रहती । वहाँ मेरा तेरा नही रहता । वहाँ कोई गुरु या कोई शिष्य ऐसा नही रहता । वहाँ कोई भाई,भेरा नही रहता ।।।८७।।

नहीं रेत राजा, नहीं दास स्वामी ।

नहीं नार पुरूषा, सबे सन्त नामी ।।८८।।

वहाँ पे कोई प्रजा व कोई राजा नही रहता। वहाँ कोई दास या कोई स्वामी भी नही रहता। वहाँ पे कोई नारी या कोई पुरुष नही रहता । वहाँ सिर्फ कैवल्य ज्ञानी संत रहते ।।।८८।।

सिला गोल गर्दग, खुणो एक नाही ।

चांदी सेत बरणी, जेसी हेम झांई ||८९||

वह सिध्दसिला गोल गर्दग बिना खुणे की है । उसका वर्ण चांदी के समान सफेद है । उसमे सोने की झांई है |||८९||

लंघी सिध सिला, पुंथा देश दुजे ।
कोटा कळस आगे, झीला मिल सुजे ||९०||

वह सिध्दसिला मैने लांघी और मै यह होनकाल देश के परे के दुजे सतस्वरुप देश मे पहुँच गया । वहाँ करोडे ही कलसो की चमचमाट दिखने लगी |||९०||

चोऊँ फेर कोटंग, लडा लुंब लागी ।
मीण्या रतन मोत्या, असंख जोत जागी ||९१||

चारो ओर से उस देश का परकोट दिखने लगा । वह परकोट मणीयो के,रतनोके और मोतीयो के लडावो से सजा हुवा था और उन लडावो से असंख्य ज्योतीयो का प्रकाश झिगमिग कर रहा था |||९१||

अनन्द बाय बाजे, गुंजे गिगन सारो ।
नितो धिंन बाणी, अेसो देस म्हारो ||९२||

वहाँ आनंद देनेवाली हवा बहती है और गिगन सुंदर ध्वनीयो से गुंज रहा है । वहाँ नित्य संतो का धन्य धन्य हो रहा है |||९२||

सुण्यो सन्त आगम, चेते बावन गादी ।
आवे बिवान साम्हो, साथे सन्त सादी ||९३||

यहाँ वहाँ पहुँचनेवाले संत के समाचार मिलते ही बावन गादी चेतती है और वह बावन गादी का विमान सामने आता है और संतो के पधारने के समाचार अमरलोक मे देता है |||९३||

बधाई बधाई , सन्तारी बधाई ।
ल्यावो जाय सामा, धिंनो आज आई ||९४||

सभी अमरलोक के संत मृत्युलोक से अमरलोक आनेवाले संत की बधाई आपस मे देते है और आज का दिन धन्य है ऐसा कहते है और संत को सामने जाकर ले आते है |||९४||

हर के देश सारो, अेको अंबर छावे ।
पेरावे सन्ता कुँ, बधावे झुलावे ||९५||

सभी देश हर्षित होता है और खडे रहने की जरासी भी अधिक जगह नही बचती ऐसा संतो से आकाश भर जाता है । उस देश संत पहुँचते ही कोई स्नान कराता है तो कोई कपडे पहनाता है तो कोई झुले पे बैठाकर उस संत को झुलाता है |||९५||

भुले सुध त सोई, हुये चक्रत सारा ।
निर्मळ नुर बरसे,भिजे अमीं फुंवारा ||९६||

उस संत को देखकर सभी सुध भूल जाते है । सभी चक्रत हो जाते है । जानेवाले संत के मुख पे निर्मल तेज बरसता है । संत का शरीर अमृत के फंवारो से भिगता है ।।।९६।।

गले माळ मोत्यां , रूळे रतन हीरा ।
ढुळे शिश पंखो, चरचे सुगन्धा नीरा ।।९७।।

वहाँके संत संतके गलेमे मोतीयोकी मालाये डालते है । संतके तल पैरो निचे रतन,हिरे,रुलते है । संत के सिरपर कोई पंखा चलाते है तो कोई सुगंधी द्रव्य लगाते है ।।।९७।।

भळके भवन सारो, दिपे तेज भारी ।
बरणु सुख सारो, किसी सगत हमारी ।।९८।।

वहाँ के सभी भवन झिगमिग झिगमिग झलकते है । उनका भारी तेज दिखता है । ऐसे अनेक प्रकार के चिन्ह वहाँ होते है । वहाँ के सारे सुख बताने की मेरी शक्ति नही है ।।।९८।।

अनंत रूप लिला, अनन्त सन्त ब्राजे ।
अनन्त बेद बाणी , कर सीपंथ छाजे ।।९९।।

वहाँ अनंत प्रकार की लिलाये है । वहाँ अनंत संत बिराजे हुये है । वहाँ उस देश की अनंत वेद और बाणी है । कर सी पंथ छजे ( ) ।।९९।।

नही वार पारंग, दसू दिस देखा ।
नितो नित लिला, अगेखंग अेनेखा ।।१००।।

उस देश को दिसो दिशा से देखने पे भी वारपार नही आता । वहाँ नित्य नित्य अनेको प्रकार की लिलाये होती ।।।१००।।

सुगंध बाग ब्रछंग, बेठा सन्त माही ।
झिगामिग लागी, बोला चाल नाही ।।१०१।।

वहाँ के बाग और बगीचे सुगंधित है । उसमे संत बैठे है । उन बगीचो मे झिगामिग लगी है । वे संत आपस मे बाते नही कर सकते इसने समाधी के सुख मे मग्न रहते ।।।१०१।।

उन मुन ध्यान मुद्रा, सदा काळ रेते ।
कोटा कलप ब्रम्हा, सिंभु कोट बरते ।।१०२।।

वे उनमुनी ध्यान मुद्रा मे सदा बैठे रहते । उनके ध्यान काल मे ब्रम्हा के और शंकर के करोडो कलप के कलप बित जाते ।(आठ अब्ज,सत्तर कोटी,इक्यानवे लाख,बीस हजार अपने वर्ष के एक दिन और रात्री होती है । ऐसे दिनो का ब्रम्हा का तीस दिना का एक महीना होता है और ऐसे बारह महीनो का ब्रम्हा का एक वर्ष होता है । ऐसे सौ वर्ष गये याने एक कलप होता है,ऐसे ब्रम्हा के तीन जलदी,एक शंकू,तीन महापद्म,निखर्व,दो खर्व,आठ अब्ज,बत्तीस कोटी वर्ष इतने अपने वर्षके ब्रम्हा की आयु रहती और महादेवकी

उमर छत्तीस परार्थ,छः मध्य,दो अंत्य, तीन जलदी,तीन शंकू,नौ महापद्म,आठ निखर्व,चार खर्व वर्ष महादेव की आयु रहती । ऐसे सौ लक्ष महादेव चले जाते,सौ लक्ष महादेव का लय होता और ब्रम्हा के सौ लक्ष कलप चले जाते तबतक वे संत ध्यान में बैठते है ।।।१०२।।

देख्या बाग भवना, देखी बावन गादी ।
देखी सिध सिल्ला, समादंग सादी ।।१०३।।

वहाँ के बाग,भवन और बावन गादी देखी । सिध्दसिला देखी और वहाँ की समाधी देखी।१०३।

जको सुख सिला, जको विरछ बागंग ।
सोई सुख भवना, निर्भे जाग जागंग ।।१०४।।

जो सुख सिला पे थे वही सुख बागो में और वृक्षो मे थे । और वैसाही सुख भवनो मे था । वह जगह निर्भय है । वहाँ काल का डर नही है ।।।१०४।।

अमर बाग भवना, सबे मान माना ।
नहीं छोट मोटंग, नहीं रूप नाना ।।१०५।।

वह बाग और भवन अमर है । वहाँ सभी आदर सन्मान से रहते है । वहाँ कोई छोटा या बडा नही है । वहाँ छोटे बडे के अलग अलग रुप नही है । वहाँ सभी के एकसरीखे रुप है । ।१०५।

नहीं भुक भोगंग, नही मन मंछया ।
अनन्त फल फुलंग, हाजर बिन अंछया ।।१०६।।

वहाँ इंद्रियोको भूक नही है तथा किसी प्रकारके भोग भी नही है । वहाँ मन भी नही है और वहाँ किसीको कोई मंछा भी नही है । वहाँ सुखोके अनंत फूल बिना इच्छासे हाजिर हो जाते है । ।।१०६।।

द्रसण परसण सारा, नितो संत मेळा ।
सबे संत संगी, करें अेम केळा ।।१०७।।

वहाँ के सभी संत एक दुसरे के दर्शन और मेल मिलाप करते रहते । वहाँ नित्य संतो का मेला लगा रहता । वहाँ सभी संत मित्र बनकर क्रिडा करते है ।।।१०७।।

या सुं नित जाणो, उठे नाहे मरणा ।
कहे सुखरामंग, धिनो गुरू सरणा ।।१०८।।

यहाँ से वहाँ संत नित्य जाते है । वहाँ जानेवाले संत को मृत्यु नही है । ऐसा यह सतगुरु का शरणा धन्य है ।।।१०८।।

नहि भिड लागी, नही ठोड रिती ।
जेसे बिवाण पसंमी, सुरा सेज जेती ।।१०९।।

वहाँ भीड भी नही है और वहाँ जगह भी खाली नही है । जैसे पुष्पक विमान मे लाख मनुष्य भी जादा के बैठे गये तो भी उसमे भीड नही होती और उसमे से लाख भी उठ गये तो भी खाली होता नही । इस जैसा सुरो का(देवों का)सेज जैसा ।।।१०९।।

तजे भ्रम क्रमंग, भजे राम कोई ।
जके जन पोता , अखी अमर होई ।।११०।।

यहाँ जो भी भ्रम और कर्म त्यागकर रामनाम का भजन करता वह वहाँ पहुँचता और अक्षय और अमर हो जाता ।।।११०।।

छुटे थूळ काया, नवो तत्त खुटें ।
बणे सन्त काया, ईसा सुख लुटे ।।१११।।

रामनाम से संत की स्थुल काया,नौ तत्व की काया सदा के लिये मिट जाती और संत की दिव्य काया बन जाती । उस काया से संत ऐसे अनूप सुख लुटता ।।।१११।।

पुँथा जन जाई, हे ज्युं बिध जाणे ।
बिना सिपंत पुंथाँ, करो के बखाणे ।।११२।।

जो संत वहाँ पहुँचे वे यह सुख की विधी जानते । जो वहाँ पहुँचे नही वे वहाँ के सुखो का क्या वर्णन बतायेंगे ? ।।११२।।

नही साख सायद, कहे न बेद बाणी ।
किसी बिध जाणी , अेसी अकथ कहाणी ।।११३।।

उस देश की कोई साक्ष,हकीकत वेद तथा ब्रम्हा,विष्णू,महादेव के गाथा मे नही है । इसलिये भी जीव ऐसे अकथ हकीकत को कैसे जानेंगे ? ।।११३।।

|| श्लोक ||

मृत लोक नही थीर, नित सासा तुटे ।
सुरग लोक नहीं थीर, सुखरत खुटे ।।११४।।

मृत्युलोक के लोक स्थिर याने अमर नही है । यहाँके लोगोकी साँसे नित्य कम कम होती है । स्वर्गलोक के लोग भी स्थिर नही है,अमर नही है । उनके नित्य सुकृत खत्म होते है । ।११४।

बेकुंठ नही थीर, जबे काळ आवे ।
तिहुँ लोक नही थीर, सबे नास पावे ।।११५।।

बैकुंठके लोक भी स्थिर याने अमर नही है । वहाँ के देवतावो को भी काळ खाता है । ये सभी तीन लोको के लोग मरते है और ये सभी तीनो लोक महाप्रलय मे नष्ट हो जाते है ।।।११५।।

प्रमपद हे थीर, तिहुँ लोक जुवां ।
सुखदेव उतपत, परले न हुवा ।।११६।।

परमपद अमर है । तीनो लोकोसे अलग है । उस परमपद मे जन्मना और मरना नही है । इसलिये वहाँ के लोग अमर है,मरते नही ।।।११६।।

नही दिन मोरथ, नही पुन सांसा ।
नही तिथ बारंग, नही बरस मासा ।।११७।।

वहाँ यहाँके समान दिन,मोहरथ,पुन्य,साँस,तिथ,बार,वर्ष,मास ऐसे खुटनेवाले कोई नही।११७।।

नहीं पिन्ड ब्रहमंड , न पाँच तत्त होई ।
नही वाय प्राणा , क्षित तेज तोई ।।११८।।

वहाँ यहाँ के समान खुटनेवाले पिंड,ब्रम्हंड,पाच तत्व नही । वहाँ यहाँ के समान नाश होनेवाले वायु याने प्राण,जल,अग्नी और पृथ्वी नही है ।।।११८।।

पद गुण प्राक्रम, अमर सारा ।
कहे सुखदेव, सोई देस हमारा ।।११९।।

वहाँ सभी न खुटनेवाले गुणके तथा पराक्रम के अमरपद है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है वह देश हमारा है ।।।११९।।

हे कोई बंदो, बन्दगी रो तालब ।
तीहुँ लोक त्यागे, गहे पद मालब ।।१२०।।

रामजी के देशके बंदगी की तलब लगा हुवा बंदा है वही बंदा माया के तीनो लोक त्यागकर रामजी का पद पायेगा ।।।१२०।।

तज पुरब पिछम, पोंते समादी ।
कहे सुख देवंग, पद हे नित सादी ।।१२१।।

पूर्व का रास्ता त्यागकर पश्चिम रास्ते से जाता है वही समाधी देश मे पहुँचता है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ऐसा वह पद नित्य सादी (   ) ।।१२१।।

मृत लोक मळ मूत्र, कारजीक काया ।
जम लोक जाचनीक, जो जाच खाया ।।१२२।।

इस मृत्युलोक में मलमूत्र की काया है । यह कारजीक है । उस मलमूत्र के शरीर से कार्य होता रहता है,दुसरे किसी भी शरीर से जीव का कार्य नही हो सकता । इसलिए यह मलमूत्र की काया कारजीक है । यमलोक में याचनिक काया है । वह काया यम की याचना सहन करने की काया है । वह याचनिक कार्य सब तरह से काया सहन करती और मरती नही । तो यह यमलोको की याचनिक काया है । वहाँ कुछ सुकृत होगा,तो वह माँगकर लिया तो ही मिलता है । यमलोक में सुकृत का फल माँगने के सिवा मिलता नही।।।१२२।।

कार्णीक सुरलोक, तेज पुंज देही ।

ब्रम्ह लोक सुक्षम, ब्रम्ह सम तेही ।।१२३।।

सुरलोक में(देवोंके लोकमे)तेजपुंज की कारणीक देही है । वहाँ जादा कमाई करते नही आती । वहाँ से सुकृत का फल भोगा याने उसे वापस यहाँ मृत्युलोक मे डाल देते । ब्रम्हलोक मे सुक्ष्म (अती छोटा)देह मिलता । वह सुक्ष्म देह ब्रम्ह समान(सरीखा)है ।।।१२३।।

जबे संत कायां, द्रब रूप धारे ।
के सुखदेव संत, मोख पधारे ।।१२४।।

जब संत मोक्ष को जाते तब संत को दिव्य काया प्राप्त होती है । यह दिव्य काया संत मोक्ष को जाते समय ही धारन करते है ।।।१२४।।

अे पंच काया, चारू सो माया ।
सुखदेव पंचमी, सतश्रूप भाया ।।१२५।।

यह उपर बतायी हुई पाँच काया
१) मृत्युलोक की मलमूत्र की काया ।
२) यमलोक की याचनिक काया ।
३) देवलोक की तेजपुंज की काया ।
४) ब्रम्हलोक की ब्रम्ह जैसी सुक्ष्म काया ।
५) संतो की मोक्ष को जाते समय की दिव्य काया ।

ऐसी पाँच काया है । इस पाँच काया में से चार काया माया है और पाचवी दिव्य काया सतस्वरुपी है ।।।१२५।।

|| इति ||

|| श्री पिंड ब्रम्हांड वैराट छंद संपूर्ण ||